

lR; opu

ikxke u- 326

: r & 2%14&23

: r 2%14 में हम पढ़ते हैं,

“फिर खाने के समय बोअज़ ने उससे कहा, यहीं आकर रोटी खा, और अपना कौर सिरके में डुबा। तो वह लवनेवालों के पास बैठ गई, और उसने उसको भुनी हुई बालें दी; और वह खाकर तृप्त हुई, वरन् कुछ बचा भी रखा।”

मैं फिर पूछता हूँ, “क्या बोअज़ रूत में रुचि रखता था?” वह तो उसका प्रेमपुजारी हो गया था और यथासम्भव प्रयास करके उसे पत्नी बनाना चाहेगा। अब उसके मार्ग में एक बड़ी बाधा है।

: r 2%15]16 में हम पढ़ते हैं,

“जब वह बीनने को उठी, तब बोअज़ ने अपने जवानों को आज्ञा दी, उसको पूलों के बीच-बीच में भी बीनने दो, और दोष मत लगाओ।

वरन् मुड़ी भर जाने पर कुछ कुछ निकाल कर गिरा भी दिया करो, और उसके बीनने के लिये छोड़ दो, और उसे घुड़को मत।”

बोअज़ अपने कर्मियों से कहता है, “उसको पूलों के बीच-बीच में भी बीनने दो, और दोष मत लगाओ।” उसके साथ सदाचार निभाओ। सिला बीननेवाले स्वभाव से ही अच्छे अन्न को उठाने की मनसा रखते थे और खेत के स्वामी को उन्हें लवनी करनेवालों के पीछे रखना होता था परन्तु यहां बोअज़ कहता है कि उसे लवनी के मध्य से भी सिला बीनने दिया जाए। बोअज़ व्यवस्था का ज्ञाता था। वह जानता था कि व्यवस्था में लिखा है कि यदि पूला गलती से गिर

जाए तो उसे उठाना नहीं है। बोअज़ एक कदम आगे बढ़कर कहता है कि वे जानबूझ कर बालें गिराते जाएँ। यदि वह कहे, "आपकी बालें गिर रही हैं तो कहना कि अब आप पीछे लौटकर उसे उठा नहीं सकते। अतः वह उसे अपने लिए उठा ले।"

: r 2%17 में हम पढ़ते हैं,

"अतः वह साँझ तक खेत में बीनती रही; तब जो कुछ बीना था उसे फटका, और वह कोई एपा भर जौ निकला।"

एक एपा की कीमत एक दिन की मज़दूरी के लिए बहुत थी, विशेष करके रूत के लिए।

: r 2%18&19 में हम पढ़ते हैं,

"तब वह उसे उठाकर नगर में गई, और उसकी सास ने उसका बीना हुआ देखा, और जो कुछ उसने तृप्त होकर बचाया था उसको उसने निकालकर अपनी सास को दिया।

उसकी सास ने उससे पूछा, आज तू कहाँ बीनती, और कहाँ काम करती थी? धन्य वह हो जिसने तेरी सुधि ली है। तब उसने अपनी सास को बता दिया कि मैं ने किसके पास काम किया, और कहा, जिस पुरुष के पास मैं ने आज काम किया उसका नाम बोअज़ है।"

जब रूत अन्न के साथ घर लौटी तब नाओमी आश्चर्यचकित हो गई और रूत से पूछा, "मैं ने आज तक किसी को इतना अधिक सिला उठाते नहीं देखा है! तू आज किसके खेत में थी।" रूत ने दिन भर की घटना नाओमी को सुनाई। रूत अब भी नहीं समझ पाई थी कि बोअज़ वास्तव में था कौन परन्तु नाओमी जानती थी।

: r 2%20 में हम पढ़ते हैं,

"नाओमी ने अपनी बहू से कहा, वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, क्योंकि उसने न तो जीवित पर से और न मरे हुआं पर से अपनी करुणा हटाई! फिर नाओमी ने

उससे कहा, वह पुरुष तो हमारा कुटुम्बी है, वरन् उनमें से है जिनको हमारी भूमि छुड़ाने का अधिकार है।”

कुटुम्बी छुड़ानेहारे की व्यवस्था हमारे लिए अति विचित्र है क्योंकि हमारे विधि-विधान में इसके तुल्य कोई नियम नहीं है। यह परमेश्वर की व्यवस्था थी जो उसने अपनी प्रजा को सम्भालने के लिए बनाई थी। परमेश्वर ने भूमि और मनुष्य दोनों ही के लिए व्यवस्था दी थी। मूसा की व्यवस्था उन लोगों के लिए और उनकी भूमि के लिए अति उत्तम प्रावधान था।

रुत निश्चय ही सही खेत में पहुँची क्योंकि बोअज़ उनका निकट कुटुम्बी था। रुत की पुस्तक में हम कुटुम्बी छुड़ानेहारे का नियम क्रियाशील देखते हैं। आप इस्राएल में मूसा की व्यवस्था की प्रासंगिकता नहीं देखते हैं परन्तु इस पुस्तक में कुटुम्बी छुड़ानेहारे का नियम और अन्य दो नियम जो हमने देखें प्रभावी दिखाए गए हैं। ये बड़े विचित्र नियम हैं। परमेश्वर ने गरीबों के लिए प्रबन्ध किया था कि खेत में और दाख की बारी में फसल उतारते समय सब कुछ न उठाया जाए अपितु गरीब, परदेशी, विधवाओं के लिए कुछ छोड़ दिया जाए। यह बड़ी ही असामान्य रीति थी। उन्हें फसल काटते समय लौटना नहीं था एक बार हम अंगूर के बगीचों वाले क्षेत्र में सभाएँ कर रहे थे। वहाँ एक बहुत बड़े अंगूर के बगीचे के स्वामी को जब पता चला कि मुझे अंगूर बहुत पसंद हैं तो उसने मुझ से कहा कि उन्होंने अंगूर तोड़ लिए हैं तोभी मैं उनके बगीचे में जाकर अंगूर ले सकता हूँ। अतः वहाँ के पासबान और मैं बगीचे में गए। मित्रों, यदि मेरे पास दस टन का ट्रक भी होता तो मैं उसे भर सकता था। वहाँ अब भी लताओं में इतने अंगूर थे। कुछ गुच्छे तो वास्तव में बड़े-बड़े और रसभरे थे। मैं ने पासबान से कहा हम सिला बीन रहे हैं क्योंकि हम गरीब प्रचारक हैं। मूसा की व्यवस्था का पालन कर रहे हैं। परमेश्वर की व्यवस्था में गरीबों की मर्यादा को बनाए रखकर उनकी सहायता करने की यह विधि बहुत अच्छी थी। वे मेहनत करेंगे और अपना फल पाएँगे।

रुत की कहानी में हम कुटुम्बी छुड़ानेहारे का नियम देखते हैं जो लैव्यव्यवस्था अध्याय 25 में दिया गया है। यह नियम तीन परिप्रेक्ष्यों में व्यावहारिक था – भूमि, मनुष्य और विधवा।

बोअज़ नाओमी के पति एलीमेलेक (अर्थात् मेरा परमेश्वर राजा है) का सम्बन्धी था। मेरे विचार में एलीमेलेक और बोअज़ के पिता भाई थे। अतः वे दोनों चचेरे भाई थे। इसलिए नाओमी ने रुत से कहा कि वह उनका निकट सम्बन्धी था।

इस नियम पर यहाँ बल दिया गया है। इसका अर्थ क्या है? आइए हम इसे भूमि के सम्बन्ध में देखें। लैव्यव्यवस्था अध्याय 25 पद 23–24, “भूमि सदा के लिये तो बेची न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है; और उसमें तुम परदेशी और बाहरी होंगे। लेकिन तुम अपने भाग के सारे देश में भूमि को छुड़ा लेने देना।” अब परमेश्वर यह काम कैसे करेगा? देखिए लैव्यव्यवस्था 25:25, “यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले, तो उसके कुटुम्बियों में से जो सबसे निकट हो वह आकर अपने भाईबन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले।” यह भूमि के सम्बन्ध में कुटुम्बी छुड़ानेहारे का नियम था। आइए हम इसे व्यावहारिकता में देखें। जब इस्राएल वहाँ आया था तो वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा का देश था और उनका उस पर अधिकार तब तक ही था जब तक वे परमेश्वर से निष्ठावान थे। उन्होंने परमेश्वर से विश्वासघात किया तो परमेश्वर ने उन्हें देश से बाहर किया। परमेश्वर ने उनसे कहा, “यह भूमि मेरी है और मैं सदा के लिए इसे देता हूँ।” परमेश्वर ने उन्हें मालिकाना अधिकार दिया और उनके पास वह अधिकार आज भी है। परमेश्वर ने वह सम्पूर्ण देश उनके गोत्रों में बाँट दिया। कुछ बाइबलों के अन्त में नक्शे दिए गए हैं। वहाँ आप भूमि का बँटवारा देख सकते हैं। अब हर एक गोत्र में प्रत्येक कुल का अपना-अपना भूभाग था। अब यदि किसी की भूमि में लगातार दो तीन वर्ष अच्छी फसल न आए तो स्वाभाविक है कि वह कंगाल हो जाएगा। (अकाल का कारण भी परमेश्वर के प्रति उनकी अनिष्ठा थी) अब वह क्या करे? वह अपनी भूमि बेचेगा। जिसके पास पैसा है वह उसकी भूमि खरीद लेगा परन्तु केवल पचास वर्ष के लिए क्योंकि जुबली वर्ष में भूमि उसके स्वामी के पास पुनः आ जाएगी। इस व्यवस्था के द्वारा भूमि परिवार में ही रहती थी परन्तु जुबली वर्ष बहुत लम्बे समय के बाद आता था। और अति सम्भव था कि जुबली वर्ष आते आते अधेड़ मनुष्य जीवित ही न रहे तो उसके पुत्र को वह भूमि प्राप्त होगी। अब उस व्यक्ति का कोई समृद्ध सम्बन्धी है — चचेरा भाई; और वह उसकी सहायता करना चाहता है, तो वह आकर और ऋण चुका दे और जुबली वर्ष से पूर्व अपने भाई को उसकी भूमि दिलवा दे। अब जुबली वर्ष में इस सम्बन्धी को मुक्तिधन का भुगतान किया जाएगा। यह परमेश्वर की व्यवस्था थी। ऐसा मुक्तिदाता भाई या चाचा होना तो बड़े सौभाग्य की बात है। नहीं क्या?

यह व्यवस्था भूमि से ही सम्बन्धित नहीं थी। यह व्यवस्था मनुष्यों से भी सम्बन्धित थी। देखिए लैव्यव्यवस्था अध्याय 25:47–48, “फिर यदि तेरे सामने कोई परदेशी या यात्री धनी हो जाए, और उसके सामने तेरा भाई कंगाल होकर अपने आप को तेरे सामने उस परदेशी या यात्री या उसके वंश के हाथ बेच डाले, तो उसके बिक जाने के बाद वह फिर छुड़ाया जा सकता है; उसके भाइयों में से कोई उसको छुड़ा सकता है।” यदि किसी की परिस्थिति ऐसी बुरी हो कि

वह अपनी भूमि गिरवी रखने के बाद भी किसी कारणवश परिवार का व्यय नहीं उठा पा रहा है और उसे विवश होकर स्वयं को दासत्व में बेचना पड़े और जुबली वर्ष मानो 49 वर्ष बाद आएगा तो सम्भवतः वह दासत्व में ही मर जाएगा। परन्तु यदि उसका चाचा या चचेरा भाई आए और कहे कि वह अपने भतीजे या भाई को दास देखना नहीं चाहता। वह उसकी कीमत चुका देता है तो वह दास स्वतंत्र हो गया क्योंकि उसके चाचा या भाई ने उसे छोड़ा लिया है। अब स्वतंत्र है।

कुटुम्बी छुड़ानेहारा प्रभु यीशु मसीह का प्रतीक है। मसीह हमारा कुटुम्बी छुड़ानेहारा है। यही कारण है कि नये नियम में मुक्ति शब्द काम में लिया गया है न कि मेल कराना क्योंकि मेल कराने में पाप ढाँके जाते हैं, बस। मित्रों मुक्ति का अर्थ है कि धन देकर छुड़ाना जिससे कि मुक्ति प्राप्त व्यक्ति स्वतंत्र हो जाए। मसीह हमारी मुक्ति के लिए ही नहीं इस पृथ्वी की मुक्ति के लिए भी मरा था। हमारी यह पृथ्वी एक दिन भ्रष्टाचार से मुक्ति पाएगी और नया आकाश तथा नई पृथ्वी प्रगट होंगे। यह मसीह द्वारा दी गई मुक्ति है। बाइबल में कुटुम्बी मुक्तिदाता का एकमात्र उदाहरण बोअज़ है। यही कारण है कि मैं ने रूत की पुस्तक पर लिखा हुआ है – यह मुक्ति का प्रेमपक्ष प्रगट करती है। यहाँ एक कुटुम्बी छुड़ानेहारा है परन्तु उसे उस क्षमता में काम नहीं करना है। हम देखेंगे कि बोअज़ से पहले एक और निकट कुटुम्बी है परन्तु वह पीछे हट जाता है। उसे रूत की चिन्ता नहीं थी परन्तु बोअज़ उससे प्रेम करता था। यही तो अन्तर है। आवश्यक नहीं था कि परमेश्वर हमें मुक्ति दिलाता क्योंकि हम तो भटके हुए पापी थे। वह तो तब भी पवित्र और न्यायी परमेश्वर ही रहता परन्तु वह हमसे प्रेम करता था। अतः आपने देखा कि मुक्ति द्वारा उद्धार एक प्रेम कथा है, जो यहाँ साधारण शब्दों में प्रगट की गई है जिसके पात्र मोआबी लड़की और इस्राएल का बोअज़ है।

: r 2%21&23 में हम पढ़ते हैं,

“तब रूत मोआबिन बोली, उसने मुझ से यह भी कहा, जब तक मेरे सेवक मेरी सारी कटनी पूरी न कर चुकें तब तक उन्हीं के संग-संग लगी रह।

नाओमी ने अपनी बहू रूत से कहा, मेरी बेटी यह अच्छा भी है, कि तू उसी की दासियों के साथ-साथ जाया करे, और वे तुझ से दूसरे के खेत में न मिलें।

*इसलिये रूत जौ और गेहूँ दोनों की कटनी के अन्त तक
बीनने के लिये बोअज़ की दासियों के साथ-साथ लगी
रही; और अपनी सास के यहाँ रहती थी।”*

कटनी पूरी करने में लगभग छः सप्ताह का समय लगा और छः सप्ताह आप प्रतिदिन दोपहर को बैतलहम में ज्योतिषी नहीं, चरवाहे नहीं, यूसुफ—मरियम नहीं, बोअज़ और रूत को देखते। बोअज़ रूत का प्रेम पुजारी हो गया था और बैतलहम में अफवाह थी, “हमारा सबसे योग्य कुँवारा प्रेम जाल में फँस गया।” मुझे पूरा विश्वास है कि नाओमी उन्हें साथ-साथ आते देखती होगी। वह जानती थी कि अब कुछ करना होगा। रूत की स्थिति अलग ही थी। बोअज़ उससे प्रेम करने लगा था और वह उसे छुड़ाना चाहता था। एक ऐसा उद्धारकर्ता जो अति अद्भुत है। वह 2000 वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर आया कि हमें छुड़ा ले।

v/;k; 3

अब कटनी समाप्त हो गई और दावनी का समय आ गया है। यह तो स्पष्ट है ही कि रूत अपना अधिकार नहीं माँग रही है इसलिए नाओमी को अब परिस्थिति सम्भालना है। रूत की स्थिति इस समय अत्यधिक असामान्य है। मेरे विचार में इस अध्याय की घटनाओं को समझने के लिए आवश्यक है कि मूसा की व्यवस्था में तीसरा नियम समझें जो यहाँ लागू होता है। यह नियम भी हमारे लिए बड़ा विचित्र है। दो ऐसे विचित्र नियम हम पहले देख चुके हैं। मित्रों, हमें उस युग का दावनी का स्थान और उसका महत्व भी समझना आवश्यक है।

अब आप यदि सोचें कि जो नियम हमने अब तक देखें हैं वे विचित्र हैं तो इस नियम को देखें – व्यवस्थाविवरण 25:5–9, “जब कई भाई संग रहते हों, और उनमें से एक निपुत्र मर जाए, तो उसकी स्त्री का विवाह परगोत्री से न किया जाए; उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी पत्नी कर ले, और उससे पति के भाई का धर्म पालन करे। और जो पहला बेटा उस स्त्री से उत्पन्न हो वह उस मरे हुए भाई के नाम का ठहरे, जिससे कि उसका नाम इस्राएल में से मिट न जाए। यदि उस स्त्री के पति के भाई को उससे विवाह करना न भाए, तो वह स्त्री नगर के फाटक पर वृद्ध लोगों के पास जाकर कहे, ‘मेरे पति के भाई ने अपने भाई का नाम इस्राएल में बनाए रखने से मना कर दिया है, और मुझ से पति के भाई का धर्म पालन करना नहीं चाहता।’ तब उस नगर के वृद्ध उस पुरुष को बुलवाकर उसे समझाएँ; और यदि वह अपनी बात पर अड़ा रहे, और कहे, ‘मुझे इससे विवाह नहीं भावता,’ तो उसके भाई की पत्नी उन वृद्ध लोगों के सामने उसके पास जाकर उसके पाँव से जूती उतारे, और उसके मुँह पर थूक दे; और कहे, ‘जो पुरुष अपने भाई के वंश को चलाना न चाहे उससे इसी प्रकार व्यवहार किया जाएगा।’ मेरे विचार में, मित्रों आप स्वीकार करेंगे कि यह एक विचित्र नियम है! जहाँ तक मैं जानता हूँ, रूत की पुस्तक ही धर्मशास्त्र में इसका उदाहरण देती है परन्तु यह नियम सबसे अधिक लागू हुआ होगा क्योंकि यह निःसन्तान मृतक के परिप्रेक्ष्य में लागू होता था।

अब यह परिस्थिति देखिए। मान लो कि एप्रेम के पहाड़ी प्रदेश में एक पुरुष रहता है। (आज सामरिया के नाम से जाना जाता है) और उसके अनेक पुत्र हैं। उसका एक पुत्र लालटेन साफ करके रखता है और अन्धेरा होने पर उसे जलाता है और सीटी बजाता हुआ सड़क पर

चल देता है। उसका एक भाई अन्य भाइयों से कहता है, "वह जा कहां रहा है?" वे कहते हैं, "पता नहीं!" बहुत रात बीत जाने पर वह सीटी बजाता हुआ लौटता दिखाई देता है वह घर में आ जाता है परन्तु किसी से कुछ नहीं कहता है। वे उससे पूछते तो कुछ नहीं हैं परन्तु अचम्भा अवश्य करते हैं। अगली रात वह फिर निकल पड़ता है। उसके भाइयों की उत्सुकता बढ़ती है। अतः प्रातः काल वे उससे पूछते हैं। अब तीसरी रात जब वह बाहर जाकर लौटता है तब उसके भाई उसके सामने आते हैं और पूछते हैं, "तू कहाँ गया था?" "ओह बस वहाँ नीचे तक गया था।" वे कहते हैं, "हम जानते हैं कि वहाँ एक नया पड़ोसी आया है।" वह कहता है, "हाँ, आया है।" तब दूसरा भाई कहता है, "उनकी एक पुत्री है?" वह कहता है, "हाँ।" वे उससे पूछते हैं, "क्या यह सच है कि तू उसके पास गया था?" वह कहता है, "मैं अच्छे पड़ोसी होने का प्रयास कर रहा हूँ। इस कारण मैं उनसे भेंट करने गया था।" वे कहते हैं, "हम विशेष करके यह जानना चाहते कि तू उस लड़की से मिलने गया था?" वह कहता है, "साफ कहीं मैं उसी से मिलने गया था।" वे उससे पूछते हैं, "हम जानना चाहते हैं कि क्या तू उस लड़की में रुचि रखता है?" वह कहता है, "सच कहीं तो मैं उसमें रुचि रखता हूँ।" वे कहते हैं, "हमने उस लड़की को ध्यान से देखा है और हमें वह स्वीकार नहीं है। हमारे विचार में, हमें पारिवारिक क्षमा करना है क्योंकि यदि तुझे कुछ हो गया तो हम में से किसी एक को उससे विवाह करना पड़ेगा।" मूसा की व्यवस्था के अनुसार वह उनमें से किसी एक से विवाह करेगी, यदि उसके पास सन्तान नहीं हुई। अब वह कहता है, "मैं उससे विवाह करूँगा क्योंकि मैंने आज उससे पूछा था और वह तैयार है।" हमारे विचार में तुझे डॉक्टर के पास जाकर जाँच करवाना चाहिए कि तू पूर्ण स्वस्थ है क्योंकि हम तो उससे विवाह नहीं करेंगे। हम उसे पसन्द नहीं करते हैं। अब मान लो कि यह युवक उसे विवाह कर लेता है और विवाह पश्चात रोगी होकर मर जाता है, या उसे बैल सींग मार देता है या आंधी में उस पर पेड़ गिर जाता है, या नदी में डूब जाता है, या युद्ध में मारा जाता है। अब उसकी पत्नी विधवा हो गई। अब वह किसी भी भाई से विवाह करेगी। और वह उसे इन्कार करेगा तो परेशानी में पड़ जाएगा। अब वह विरोध करे, "हमने तो अपने भाई को चेतावनी दी थी कि इस स्त्री से विवाह न करे। मैं तो इससे विवाह नहीं करना चाहता हूँ।" वह उसे वृद्धों की सभा में ले जाएगी और यदि वह वहाँ भी इन्कार करे तो वह आगे बढ़कर उसकी जूती लेकर उसके मुँह पर थूक देती। मित्रों, इसका अर्थ है कि उसका अपमान हुआ। कोई भी पुरुष इस सीमा तक गिरना नहीं चाहेगा।

अतः आप देख सकते हैं कि यह भी एक बड़ा विचित्र नियम है जो निःसन्तान विधवा को अद्वैत स्थिति में रखता है। इससे उसकी स्थिति सर्वथा बदल जाती है। अब वह किसी भी भाई

का दावा कर सकती है। सच तो यह है कि यह मृतक पति के प्रति उसका कर्तव्य है। मेरी समझ में यह उस युग में परिवार को एकता में रखने के लिए था। इस नियम के कारण परिवार के प्रत्येक सदस्य का यह उत्तरदायित्व हो जाता था कि वह अपने भाई के जीवनसाथी चयन में सहभागी हो क्योंकि उसके चुनाव का प्रभाव उन पर भी पड़ता था।

यह नियम परमेश्वर की व्यवस्था था और परमेश्वर के मन में इसके निमित्त दो उद्देश्य थे, अधिक भी हो सकते हैं, पहला तो यह था कि वह स्त्री जाति को सुरक्षित रखना चाहता था। आप स्वयं ही समझ सकते हैं कि यदि किसी स्त्री का पति मर जाए और अपनी पत्नी के लिए खेत, दाख की बारी, और भेड़े छोड़ जाए तो निश्चय ही उसे उनकी देखभाल में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। अतः वह तुरन्त ही अपने पति के किसी भाई या निकट कुटुम्बी का दावा करेगी और उसे निर्णय लेना ही होगा। यह नियम स्त्री की रक्षा के लिए था। मैं ने आलोचना सुनी है कि बाइबल पुरुषों का पक्षपात करती है। मेरे मित्रों, यदि कोई ऐसा कहता है तो स्पष्ट है कि उसने बाइबल सावधानीपूर्वक नहीं पढ़ी है। यदि कोई यह सोचे कि पुरुष के पास बचने की आशा है तो यहाँ वह सम्भव नहीं है।

इसका दूसरा कारण यह है कि परमेश्वर भूमि के अधिकारों की भी रक्षा करना चाहता था। परमेश्वर ने इस्राएल को प्रतिज्ञा का देश और गोत्र को अपना-अपना भूभाग ही नहीं प्रत्येक परिवार को भूमि का एक भाग दिया था। सबकी अपनी-अपनी भूमि थी। जैसा हमने देखा है कि कोई परिवार अपनी भूमि बेच सकता था परन्तु वह जुबली वर्ष में उसके पास लौट आती थी। यह भी सम्भव था कि पति के मरणोपरान्त उसकी विधवा किसी परदेशी से विवाह कर ले तो उस परिवार की भूसम्पत्ति परदेशी के हाथ लग जाएगी। यही कारण था कि परमेश्वर न संपदा को परिवार में और राष्ट्र में सुरक्षित रखने के लिए वरन् उसी गोत्र में रखने के लिए निकट कुटुम्बी से विधवा के पुनर्विवाह का प्रावधान किया था कि सम्पदा का स्वामित्व परिवार ही में रहे। हमें यह नियम बड़ा विचित्र लगता है परन्तु इस्राएल के लिए यह सुलभ व्यवस्था थी।

रूत निःसन्तान विधवा थी और उसके पति की संपदा उनके हाथ में नहीं थी क्योंकि वह और नाओमी गरीब थे। उसके पास अधिकार था कि वह बोअज़ का दावा करे क्योंकि वह उनका निकट कुटुम्बी था। नाओमी ने भी स्पष्ट कर दिया था कि वह कुटुम्बी छुड़ानेहारा है। सच तो यह है कि बोअज़ भी इस ओर परिश्रम कर रहा था परन्तु उसके हाथ बँधे थे। नियम के अनुसार रूत को पहल करना आवश्यक था। वह उसका दावा करेगी। आगे चलकर हम देखेंगे कि बोअज़ से पहले एक और निकट कुटुम्बी है और यदि रूत चाहे तो उसका दावा कर सकती है। बोअज़

नहीं जानता था कि वह किसे चाहेगी। अतः उसे प्रतीक्षा करनी थी। अब क्योंकि रूत पहल नहीं कर रही है, अतः नाओमी उससे कहती है, “तुम्हें बोअज़ पर प्रकट करना होगा कि तुम उसे कुटुम्बी छुड़ानेहारा बनाना चाहती हो।”

अब हम एक बड़ी विचित्र परम्परा देखेंगे। अतः उसे समझने के लिए आवश्यक है कि उस युग के खलिहान को समझें। देखिए परमेश्वर ने इन लोगों के लिए कैसी अद्भुत व्यवस्था की हुई थी। क्योंकि उनका मुख्य व्यवसाय खेती था अतः कृषि सम्बन्धित अनेक नियम हैं। मूसा की व्यवस्था केवल मनुष्यों के ही लिए नहीं, भूमि के लिए भी थी और विशेष एवं विलक्षण रीति से। अतः यहाँ खलिहान और उस युग की परम्परा के सम्बन्ध में नियम थे। खलिहान प्रायः पर्वत के ऊपर होते थे जिससे कि वायुप्रवाह के द्वारा भूसा उड़ाया जा सके। दाखरस का कुण्ड इसके सर्वथा विपरीत होता था। वह पहाड़ के नीचे था कि अंगूर उठाकर लाने में आसानी हो। आपको स्मरण होगा कि गिदोन दाख के कुण्ड में दावनी कर रहा था कि मिद्यानियों को पता न चले अन्यथा वे उसे लूट लेते। वहीं परमेश्वर का स्वर्गदूत प्रगट हुआ और उससे कहा, “हे शूरवीर सूरमा!” (न्यायियों 6:12) देखिए परमेश्वर भी विनोदी स्वभाव रखता है। गिदोन पहाड़ की चोटी की अपेक्षा नीचे दाख के कुण्ड में भयातुर दावनी कर रहा है। आप उसकी हताशा को देख सकते हैं, वह अन्न ऊपर उछालता है और भूसा लौटकर उसी के ऊपर गिरता है क्योंकि वहां हवा है ही नहीं। मेरे विचार में वह बहुत निराश रहा होगा। तभी परमेश्वर का स्वर्गदूत आकर कहता है, “हे शूरवीर सूरमा” गिदोन ने पलटकर देखा होगा कि वह किससे बात कर रहा है। जब उसने देखा कि वहाँ अन्य कोई नहीं है तो उसने कहा, “कौन? मैं? मुझे तू सूरमा कहता है। मैं तो एक कायर मनुष्य हूँ।” मेरे मित्रों, वह कायर ही था। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह एक कायर को भी काम में ले सकता है यदि वह समर्पित हो। जब उसने परमेश्वर को समर्पण कर दिया तब वह केवल 300 निहत्थे मनुष्यों के साथ मिद्यानियों पर विजयी हुआ। आज हमारे लिए यह यह कैसे प्रोत्साहन की बात है। रूत की कहानी न्यायियों के युग की ही है परन्तु उस स्थिति में जब इस्राएल परमेश्वर की भक्ति में था। स्मरण कीजिए कि नाओमी ने मोआब में सुना था कि इस्राएल में अकाल (परमेश्वर का दण्ड) समाप्त हो गया है। सम्भवतः इस्राएल में शान्ति थी और खलिहान फिर से पहाड़ी पर थे।

अब हम यह खलिहान देखते हैं। फर्श चिकनी मिट्टी का स्वच्छ स्थान था। सामान्यतः खलिहान गोलाकार होता था और उसके चारों ओर चट्टाने लगाई जाती थीं। जब मैं वहाँ था तब मैं ने अनेक स्थानों में विशेष करके सामरिया में खलिहान देखे। वह कटनी का समय था।

अतः हम खलिहान में दावनी नहीं देख पाए। वे पहाड़ के ऊपर ही थे। वे आज भी वही पुरानी विधि काम में लेते हैं। कटनी के बाद अन्न खलिहान में लाया जाता था। दोपहर बाद हवा चलती है और कभी कभी मध्य रात्री तक चलती रहती है। जब तक हवा चलती थी वे दावनी करते रहते थे। पूले फर्श पर डाल दिए जाते थे और बैल उसे रौंदता था। तदोपरान्त कर्मी कांटे से उसे हवा में उछालते थे कि भूसा हवा में उड़ जाए और अन्न का दाना फर्श पर गिरे। जब हवा रुक जाती थी — किसी भी समय, सूर्यास्त या रात नौ बजे या मध्यरात्री—तब वे धार्मिक उत्सव मनाते थे। वर्ष के इस समय सब परिवार खलिहान के पास एकत्र होते थे अर्थात् बड़ी संख्या में लोग वहाँ होते थे। उत्सव समाप्त होने पर पुरुष अन्न के ढेर के पास ही सो जाते थे। क्योंकि खलिहान गोलाकार था, वे अपने सिर गेहूँ की ओर और पाँव बाहर की ओर रखकर सोते थे। देखने में ऐसा लगता था कि वे तीलियाँ हैं। यह इसलिए कि चोरों से अन्न की रक्षा की जाए।

यह समय अच्छी फसल के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने और आनन्द मनाने का होता था। इस्राएल के अनेक पर्व जैसे पहले फल का पर्व, पिन्तेकुस्त का पर्व आदि सब खलिहान से ही सम्बन्धित थे। वे विपुल फसल के लिए परमेश्वर की स्तुति में भजन गाते थे, आप कल्पना कर सकते हैं कि वे सब वहाँ पहाड़ पर एकत्र हैं, और स्वर्ग की ओर निहारते हुए भजन गा रहे हैं, जब आप भजन संहिता पढ़ते हैं, तब ध्यान दीजिए कि उनमें से कितने भजन इस विशेष उत्सव से सन्दर्भित हैं।

अब कुटुम्बी छुड़ानेहारा—विधवा के सन्दर्भ में और खलिहान का दृश्य मन में बसा कर हम आगे बढ़ते हैं।